How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दु:चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*14*(1), 325-331
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दु:चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,
Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका

शिक्षा मानव का मूलभूत साधन है। जिसने मनुष्य के जीवन को काफी परिवर्तन किया है। एक समय था जब नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। वह न बोलना जानता है न चलना–फिरना। उसका न कोई मित्र होता है और न कोई शत्रु। यही नहीं, उसे समाज में रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान नहीं होता है और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे–वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण उसका जहाँ एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है, वही दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है। श

परिणामस्वरूप वह शनैः–2 प्रोढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सच तो यह है कि शिक्षा के इतने लाभ हैं कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस संदर्भ में यहाँ केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षा माता–पिता के समान पालन–पोषण करती है और पिता के समान समाज में उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भाँति सांसरिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है।

नवोदय विद्यालय :–

इन विद्यालयों मे ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद मेधावी छात्रों को अलग से मुफ्त शिक्षा दी जाती है ताकि उन्हें देश के उच्च नागरिकों की श्रेणी में गिना जाये। ये विद्यालय शुरू में राज्य सरकार के सहयोग से चलाए गए गये। लेकिन फिर बाद मे केन्द्रीय सरकार ने भी भरपूर सहयोग दिया। केन्द्रीय सरकार ने नवोदय विद्यालयों में अपना योगदान 50% दिया और 50% राज्य सरकार ने सहयोग दिया।

नवोदय विद्यालयों के उद्देश्य :–

1. इन विद्यालयों का उद्देश्य समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों की पालना करना है।
2. इन विद्यालयों में देश के विभिन्न भागों में ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिभाशाली बच्चों को एक साथ रखकर और उन्हें अवसर प्रदान करके उनकों राष्ट्रीय एकता के लिए प्रोत्साहित करना है।
3. इन विद्यालयों में बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक और साहसिक गति विधियों में भाग लेना और शारीरिक शिक्षा आदि के द्वारा अच्छी गुणात्मक नई शिक्षा प्रदान करना है।
4. इसका मुख्य उद्देश्य भाषिय योग्यता के अन्तर्गत सभी बच्चों को तीन भाषाओं में योग्यता देना है।

केन्द्रीय विद्यालय :–

ये विद्यालय केन्द्रीय सरकार के सहयोग से खोले गये। इन विद्यालयों को केन्द्रीय स्थानों पर जैसे दिल्ली, चण्डीगढ़ आदि बड़े–बड़े शहरों में जहाँ नेवी और आर्मी तैनात की गई है वहाँ इन विद्यालयों को स्थापित किया गया। ताकि इन कर्मचारियों के बच्चे उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके और राष्ट की प्रगति में अपनी भूमिका नागरिक के रूप में निभा सके।

केन्द्रीय विद्यालय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकारी स्कूलों का एक भाग है।

केन्द्रीय विद्यालयों के उद्देश्य :–

1. इनका मुख्य उद्देष्य भारत रक्षा सेवा के कर्मचारियों के बच्चों को शिक्षित करना है।
2. इन सभी केन्द्रीय विद्यालयों में पाठ्यक्रम और वर्दी का प्रावधान एक जैसा है।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

RESEARCHERID THOMSON REUTERS

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दु:चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
***International Journal of Economic Perspectives*, *14*(1), 325-331**
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

3. इन विद्यालयों का एक और मुख्य उद्देश्य बच्चों का शिक्षा के साथ–साथ उन्हें आर्मी शिक्षा के लिए भी तैयार करना है।
4. इन विद्यालयों में एक समान पाठ्यक्रम से उन बच्चों को शिक्षा में असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता जिनके माता–पिता का स्थान्तरंण एक स्थान से दूसरे स्थान पर हो जाता है।
5. इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य भारत रक्षा सेवा के कर्मचारियों के बच्चों को बिना भय और डर के स्वतन्त्र रूप से नई गुणात्मक शिक्षा देना है।

शैक्षिक उपलब्धि :–

शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों के व्यवहारों में पूर्व निर्धारित संशोधन करने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रयत्न में छात्रों के लिए शिक्षण के उद्देश्य बनाए जाते हैं और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के पश्चात् अध्यापक यह अवश्य जानना चाहता है कि शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति कहां तक हुई। इस जानकारी की प्राप्ति के लिए इन विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा का मूल्यांकन करते हैं।

दु:चिन्ता :–

जब प्रतिभाशाली बच्चे प्राथमिक स्तर में बाल्यकाल को पार करके माध्यमिक स्तर में किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं तो उन बच्चों के सामने शारीरिक और मानसिक रूप में अनेक दु:चिन्ताए उत्पन्न हो जाती है क्योंकि सभी बच्चे किसी कार्य को करने में निपुण नही होते। इनमें से कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो शारीरिक कार्य करने में कठिनाई अनुभव करते हैं, लेकिन उन्हे जबरदस्ती उस कार्य को करने के लिए बाधित किया जाता है। इसी प्रकार कुछ बच्चे जो मानसिक रूप से दक्षतापूर्ण कार्य करने में समर्थ नही होते व कठिनाई का अनुभव करते हैं। इन्ही कारणों के कारण उनकी शिक्षा का विकास बाधित होता है तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लगातार इस प्रकार का प्रभाव पड़ने से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास का स्तर गिरने लगता है तथा दु:चिन्ता के प्रभाव में आने वाले बच्चे पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ अन्य रचनात्मक कार्यों में भी रूचि नही ले पाते। अध्ययनकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा उन सभी कारणों को जानने व उनका निवारण करने का प्रयास किया गया है जिससे कि विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में व सफलता के रास्ते में आने वाले दु:चिन्ता के प्रभावों को दूर किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता :–

राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार के द्वारा खोले गये स्कूलों में यह प्रावधान है कि जो विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं और निर्धन भी तथा प्रतिभाशाली हैं तो राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार ने उनके लिए नवोदय विद्यालयों की स्थापना ग्रामीण क्षेत्रों में की है ताकि उन बच्चों को अच्छी गुणात्मक शिक्षा की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा दी जाये। इसी प्रकार भारत रक्षा सेवा में रत कर्मचारियों के बच्चों के लिए केन्द्रीय विद्यालयों की आवश्यकता पड़ी।

लेकिन एक बात मन के अन्दर घर बनाए रहती है कि कैसे हम अपने आप को समायोजित करें। क्योंकि नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षा के साथ–साथ फिजिकल वर्क और सैन्य शिक्षा पर दिया जाता है। सुबह जल्दी उठाया जाता है, समय पर खाना दिया जाता है और उनकी मर्जी के अनुसार घर पर माता–पिता से मिलने के लिये भी नहीं जाने दिया जाता क्योंकि इन विद्यालयों के सख्त नियम होते हैं। इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की दु:चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर असर पाया। इस प्रकार अनुसंधानकर्ता ने इस समस्या का चुनाव किया कि छात्रों की दु:चिन्ता का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है या नहीं।

समस्या का कथन:–

''नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दु:चिन्ता एवं **शै**क्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन में प्रयुक्त श शब्दों का परिभाषीकरण:–

1. **विद्यालय** – विद्यालय दो शब्दों से मिलकर बना है – विद्या + आलय अर्थात् विद्या का अर्थ है शिक्षा और आलय का अर्थ है स्थान या घर। जहाँ पर छात्र एवं छात्राएं अपनी शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते समय बहुत सारी औपचारिकताओं का पालन करना पड़ता है।
2. **नवोदय विद्यालय** :– केन्द्रीय और राज्य द्वारा छठी से बाहरवीं कक्षा तक ये विद्यालय सन 1986 तक प्रतिभाशाली

© 2020 by The Author(s). CC BY ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दुःचिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
***International Journal of Economic Perspectives*,*14*(1), 325-331**
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article
विद्याार्थियों के लिए स्थापित किए गए। इन विद्यालयों में बच्चों को गुणात्मक शिक्षा दी जाती है।

3. **केन्द्रीय विद्यालय** :– केन्द्रीय व राज्य सरकार द्वारा संचालित छठी से बाहरवी कक्षा तक के ये विद्यालय 1962 में स्थापित किए गए। इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के साथ–2 सैन्य शिक्षा के लिए तैयार करना। जिससे ये शारीरिक रूप से भी तंदरूस्त रहें।

4. **माध्यमिक स्तर** :– माध्यमिक स्तर प्राथमिक स्तर के बाद की एक ऐसी कड़ी है जो बच्चों को उच्च स्तर शिक्षा के लिए तैयार करती है। प्राथमिक स्तर के बाद शिक्षा का मुख्य आधार माध्यमिक स्तर है। जिसमें विद्यार्थियों की सभी शक्तियों का विकास होता है।

5. **दुःचिन्ता** :– जब प्रतिभाशाली बच्चे प्राथमिक स्तर में बालयकाल को पार करके माध्यमिक स्तर में किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं तो उन बच्चों के सामने शारीरिक और मानसिक रूप में अनेक दुःचिन्ताए उत्पन्न हो जाती है।

6. **शक्षिक उपलब्धि** :– शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय यह है कि जब छात्र एवं छात्राएं किसी भी समान कक्षा में पढ़ते हुए शैक्षिक परीक्षा में, जो सभी बच्चों की एकत्रित रूप से ली जाती है उस परीक्षा में किसी छात्र या छात्रा द्वारा प्राप्त उपलब्धि ही शैक्षिक उपलब्धि है।

7. **विद्यार्थी** :– विद्यार्थी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है विद्या + अर्थी अर्थात विद्या को चाहने वाला विद्यार्थी कहलाता है। शिक्षा के साथ अन्य गतिविधियों में भाग लेने की अपनी रूचि को हमेशा बनाए रखता है वह भी विद्यार्थी का ही गुण है। विद्यार्थी जो पूरी शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य बिन्दु है। जिसके बिना शिक्षण प्रक्रिया अधुरी मानी जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. नवोदय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता स्तर का अध्ययन।
2. केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता स्तर का अध्ययन।
3. नवोदय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
4. केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
5. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।
6. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक उध्ययन।

परिकल्पनाएँ :–

1. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएं :–

1. यह अनुसंधान सिरसा और हिसार जिले में किया गया।
2. इसमें अध्ययनकर्ता ने सिरसा और हिसार जिले के नवोदय विद्यालय व केन्द्रीय विद्यालय को शामिल किया गया।
3. इसमें अध्ययनकर्ता ने सिरसा और हिसार जिले के नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं को लिया गया।
4. अध्ययनकर्ता ने सिरसा और हिसार जिले के नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि को लिया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि :–

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की दुःचिन्ता एंव शैक्षिक उपलब्धि को देखने के लिए अध्ययनकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या :–

प्रस्तुत शोध में सिरसा और हिसार जिले के दो नवोदय और दो केन्द्रीय विद्यालयों के 200 छात्रों को जनसंख्या के रूप में लिया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादश –

हरियाणा प्रान्त के

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दु:चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*14*(1), 325-331
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

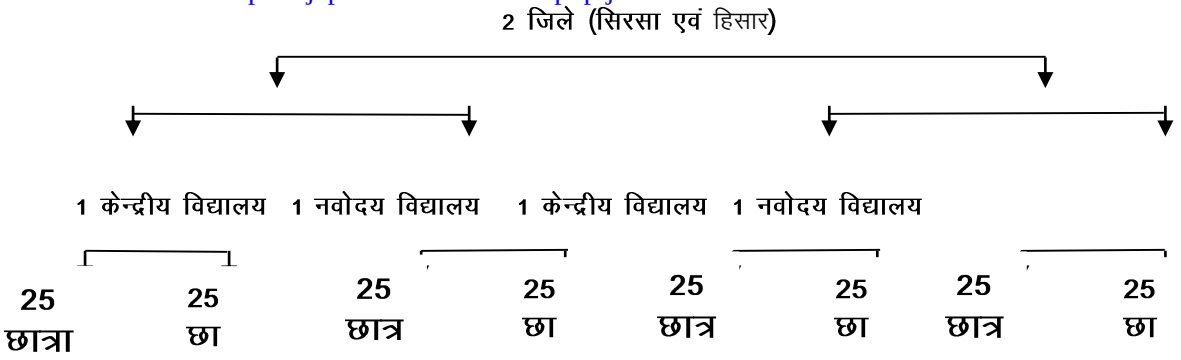

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध में दु:चिन्ता के अध्ययन हेतु डा0 ए0 कुमार शिक्षा विभाग अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ द्वारा निर्मित Sarason's Test Anxiety Scale for Children एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु छात्रों के प्राप्त अंकों को प्राप्त किया।

अध्ययन में प्रयुक्त अभिकल्प –

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता द्वारा स्थाई द्विसमूह तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली –

प्रस्तुत शोध में बन्द प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। छात्रों की दु:चिन्ता को मापने के लिए बन्द प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इसके अध्ययन हेतु डा0 ए0 कुमार, शिक्षा विभाग, मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ द्वारा निर्मित Sarason's Test Anxiety Scale for Children एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु छात्रों के प्राप्त अंकों को प्राप्त किया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ –

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया।

i) **माध्य (Mean) :-**

नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दु:चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को जाँचने के लिए बन्द प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समको के सेट का सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

माध्य का सुत्र –

$$M = \frac{\Sigma x}{N}$$

M = माध्य

Σ = योग

X = वितरण में समंक

N = समकों की संख्या

ii) **मानक विचलन (Standrad Deviation)**

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला गया। मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गो के वर्गमूल का औसत है।

मानक विचलन का सुत्र :–

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दुःचिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*14*(1), 325-331
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

σ = प्रतिदर्श का मानक विचलन

d = यथा प्राप्त आंकड़ों का मध्य बिन्दु से विचलन

N = मापों की संख्या

$\sqrt{\Sigma d^2}$ = प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

iii) t test

दो समूहों की तुलना करने के लिए T-Test लगाया गया है।

$$\text{T-Test} = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2 + \sigma_1^2}{N_1 + N_2}}}$$

M_1 = मध्यमान पहले ग्रुप का
M_2 = मध्यमान दूसरे ग्रुप का
σ^1 = प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का
σ^2 = प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का
N_1 = पहले ग्रुप की आंकड़ो की संख्या
N_2 = दूसरे ग्रुप की आंकड़ो की संख्या

परिणाम :–

1. नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का अध्ययन किया है जिसमें छात्र और छात्राओं की संख्या 100 ली गई है। इन छात्रों का इस सारणी के विश्लेषण के आधार पर प्राप्तांकों का मान क्रमशः 13.90 है तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.55 पाया गया हैं तथा प्रतिशत मान 46.66 %है।
2. केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का अध्ययन किया गया । इस अध्ययन में केन्द्रीय विद्यालय के छात्र और छात्राओं की संख्या 100 ली गई है। इन छात्रों का इस सारणी के विश्लेषण के आधार पर प्राप्तांकों का मान 12.83 है तथा प्रमाणिक विचलन 4.89 पाया गया हैं और प्रतिशत मान 43.33%है।
3. नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया है इस अध्ययन में नवोदय विद्यालय के छात्र और छात्राओं की संख्या 100 ली गई है। इन छात्रों का इस सारणी के आधार पर प्राप्तांकों का मान 18. 77 है तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 6.55 पाया गया हैं तथा प्रतिशत मान 85%है।
4. केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में केन्द्रीय विद्यालय के छात्र और छात्राओं की संख्या 100 ली गई है। इन छात्रों का इस सारणी के आधार पर प्राप्तांकों का मान 81.75 है तथा प्रमाणिक विचलन 9.58 हैं और प्रतिशत मान 82%है।
5. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें नवोदय विद्यालय के छात्र और छात्राओं की संख्या 100 और केन्द्रीय विद्यालय के छात्र और छात्राओं की संख्या 100 ली है। इन विद्यालय के छात्रों का इस सारणी के विश्लेषण के आधार पर नवोदय के विद्याल के छात्रों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 13.90 और केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 12.83 है तथा प्रमाणिक विचलन 5.55 और 4.79 है। जो विद्यालय के 't' मान 1.92 है जो कि सार्थकता स्तर 0.5 के सारणी मान 1.96 से कम है। अतः यहां शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
6. नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए छात्र और छात्राओं की संख्या 200 है। इन विद्यालय के छात्रों का इस सारणी के विश्लेषण के आधार पर नवोदय के विद्यालय के छात्र और छात्राओं की

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दुःचिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
***International Journal of Economic Perspectives*,*14*(1), 325-331**
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्त अंकों का मध्यमान 84.77 और केन्द्रीय का 81.75 है तथा प्रमाणिक विचलन 6.55 और 9.55 है। दोनों का **'t'** मान 3.65 है जो कि सार्थकता स्तर 0.5 के सारणी मान 1.96 से कम है।

अध्ययन के निष्कर्ष –

नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का अध्ययन में पाया गया कि नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता 47% है।

केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का अध्ययन में पाया गया कि केन्द्रीय विद्यालय के उनके माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता 44% पाई गई।

नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन में पाया गया कि जो नवोदय विद्यालय है उनके माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि 85% पाई गई।

केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन में पाया गया कि केन्द्रीय विद्यालय के उनके माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि 82% पाई गई हैं।

नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः यहां शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता यह कह सकता है कि नवोदय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता का स्तर है। अध्ययनकर्ता के द्वारा जब सभी विद्यार्थियों की मानकीकृत प्रश्नावली द्वारा अध्ययन किया तो पाया गया तो, नवोदय विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता समान ही पाई गई तथा केन्द्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता भी समान पाई गई। सभी विद्यार्थी अपने अध्ययन संतुष्ट पाए गए ।

अतः अध्ययनकर्ता द्वारा कहा गया कि नवोदय विद्यालय और केन्द्रीय में कहीं ना कहीं शिक्षा के साथ–साथ सैन्य शिक्षा दी जाती है और वहाँ के नियम सख्त होने की बजाय से उनमें दुःचिन्ता पाई गई। लेकिन नवोदय और केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की दुःचिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। क्योंकि जो चिन्ताएं नवोदय के विद्यार्थियों को है उसी स्तर पर उतनी ही चिन्ताएं केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों को है।

दूसरी तरफ नवोदय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च है क्योंकि इसकी प्रवेश परीक्षा पूरे राष्ट्र स्तर पर होती है। और जिन बच्चों को इनमें दाखिला दिया जाता है वे विद्यार्थी उच्च स्तर के होते हैं। उनकी बुद्धि भी उच्च होती है। लेकिन वहीं केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नवोदय के विद्यार्थियों से कुछ निम्न स्तर की पाई गई। क्योंकि ये विद्यार्थी नैवी और फौज में कार्यरत कर्मचारियों के होते हैं। इन विद्यालयों में इन्ही कर्मचारियों के बच्चे पढ़ते है। अध्ययनकर्ता द्वारा देखा गया और कहा गया कि इन विद्यालयों में वे सभी कर्मचारी जो भारत सेवा रक्षा में रत हैं। इन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया। क्योंकि कहीं ना कहीं केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों से कम पाई गई।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. यह अध्ययन नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता को दूर करने या पहचानने के लिए उपयोगी है।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020

How to Cite:
Dr. Rajesh Kumar (Dec 2020). नवोदय और केंद्रीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दुःचिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
***International Journal of Economic Perspectives*,*14*(1), 325-331**
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal/article

2. यह अध्ययन केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता को दूर करने या पहचानने के लिए उपयोगी है।
3. यह अध्ययन निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता को पहचानने और दूर करने के लिए उपयोगी है।
4. यह अध्ययन किसी भी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उपयोगी है।
5. यह अध्ययन निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करके उच्च मापदण्ड के निर्धारण के लिए उपयोगी है।
6. यह अध्ययन जिला स्तर के विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता को पहचाने के लिए उपयोगी है।
7. यह अध्ययन राज्य स्तर के विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दुःचिन्ता को दूर करने और शैक्षिक उपलब्धि को जाँचने के लिए उपयोगी है।
8. यह अध्ययन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पैदा करने के लिए उपयोगी है।
9. यह अध्ययन विद्यार्थियों में भविष्य में स्तर को बनाये रखने में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. प्रत्येक जिले के सरकारी विद्यालयों के छात्रों में चिन्ताओं का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रत्येक जिले के निजी विद्यालयों के छात्रों में दुःचिन्ताओं का अध्ययन किया जा सकता है।
3. उच्च स्तर पर विद्यार्थियों की चिन्ताओं का अध्ययन किया जा सकता है।
4. प्रत्येक जिला स्तर पर राजकीय और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
5. राष्ट्रीय स्तर पर भी विद्यालयों में दुःचिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
6. यह अध्ययन एम फिल स्तर पर भी किया जा सकता है।
7. यह अध्ययन पी.एच.डी. स्तर पर भी प्रयोग में लाया जा सकता है।
8. प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत और कम करके भी आपस में विद्यालयों और राज्यों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है जिसमें विद्यार्थियों की दुःचिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Rajesh Kumar**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Dec 2020